इकाई 23 दबावों को पहचानना और न्यूनतम सीमारेखाओं को समझना

इकाई की रूपरेखा

23.0 उद्देश्य

23.1 प्रस्तावना

23.2 पर्यावरण पर दबाव

- 23.2.1 वन्य जीवन
- 23.2.2 समुद्री तट और समुद्र
- 23.2.3 पर्वत

23.3 न्यूनतम पर्यावरणीय सीमारेखाएँ

- 23.3.1 प्रदूषण
- 23.3.2 जनसमुदाय
- 23.3.3 प्राकृतिक संसाधनों का दोहन

23.4 कुछ हल

23.5 सारांश

23.6 शब्दावली

23.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

23.0 उद्देश्य

पर्यटन को लाभकारी क्रिया के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। अधिकतर लोगों के लिए यह एक भूमि उपयोग का एक बेहतरीन और कारगर माध्यम है। इसके साथ-साथ यह एक प्रदूषण रहित, रोजगार पैदा करने वाली और विदेशी मुद्रा विनिमय कमाने वाली क्रियाकलाप है। वर्षों से इसी रूप में पर्यटन निरन्तर अग्रसर है। परंतु शोध कार्य करने वालों के अनुभव और परिणामों से पता चलता है कि यदि इसे अनियोजित रूप से विकसित किया गया तो ये क्रियाकलाप हमारी पारिस्थितिक व्यवस्था के लिए खतरनाक हो सकती है। इस इकाई के अध्ययन के बाद आप :

- पर्यटन के कारण गन्तव्य स्थल के पर्यावरण पर पड़ने वाले दबावों को समझ लेंगे,
- पर्यटन के कारण उत्पन्न न्यूनतम सीमा रेखा के मुद्दों को भी समझ पाएंगे,
- इस समस्या की प्रकृति को पहचान सकेंगे, और
- आप ऐसे उपाय जान लेंगे जिन्हें पर्यटन को प्रोत्साहित-विकसित करते समय उपयोग में लाना चाहिए।

23.1 प्रस्तावना

आज पर्यटन एक प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय उद्योग है। इस उद्योग का एक क्षेत्र जो बहुत तीव्र गति से विकसित हो रहा है वह है प्राकृतिक क्षेत्रों में पर्यटन और मनोरंजन। नदी का किनारा, संरक्षण आरक्षित क्षेत्र, पर्वत, समुद्र तट और समुद्र की ओर ही पर्यटन स्तर और मनोरंजन का विकास हो रहा है जिनमें मनोरंजन मूल रूप से प्राकृतिक क्षेत्रों में होता है।

अच्छी पर्यावरणीय योजना और प्रबंधन विशेष रूप से प्राकृतिक क्षेत्र पर्यटन में इसलिए निर्णायक हैं क्योंकि पर्यावरणीय प्रभाव उद्योग के लिए बाहरी नहीं हैं उदाहरणार्थ जैसे वह अधिकांश प्राथमिक उत्पादन और गौण निर्माण उद्योग में हैं। यदि उचित ढंग से आयोजित और प्रबंधित किया जाए तो पर्यावरणीय क्षेत्र पर्यटन संभावनाओं की दृष्टि से एक ऐसा उद्योग है जिसमें पर्यावरणीय नुकसान कम से कम है और आर्थिक लाभ अपेक्षाकृत अधिक और टिकाऊ है। इसके विपरीत अनियोजित, अनियंत्रित और अविवेकपूर्ण प्राकृतिक पर्यटन पर्यावरण को नुकसान ज्यादा पहुँचाएगा और आर्थिक लाभ का अंश कम और अल्पकालिक होगा। इनके संबंध में और सम्बद्ध दबावों और न्यूनतम सीमारेखाओं के संबंध में आगे विचार किया जा रहा है।

23.2 पर्यावरण पर दबाव

पर्यटन, भारत में सबसे तीव्र विकसित होने वाले उद्योगों में से एक है और प्राकृतिक क्षेत्र पर्यटन उसका एक महत्वपूर्ण अंग है। फिर भी पर्यटन को खुला छोड़ देने से पृथ्वी की भंगुर पारिस्थितिक व्यवस्था अस्त व्यस्त हो सकती है। पर्यटकों की बढ़ी हुई संख्या अपनी पारिस्थितिक व्यवस्था के नाजुक संतुलन पर निशेधात्मक प्रभाव डालने के कारण विवाद का विषय रही है। यहाँ हम गौर करेंगे कि पर्यटकों का मनोरंजन किस प्रकार पर्यावरण पर प्रभाव डालता है।

23.2.1 वन्य जीवन

वन्य प्राणियों के लिए बनाए गए राष्ट्रीय उद्यान और संरक्षण पर्यटन और मनोरंजन के स्तर को बढ़ा देते हैं। पर्यटन क्षेत्र को नियंत्रित करने वाले अधिकारी यह विश्वास करते हैं कि उचित नियमन के द्वारा प्रकृति और पर्यटन के मध्य एक संतुलन बनाकर रखा जा सकता है। किंतु सत्य कुछ और ही बयान करते हैं। पर्यटन में वृद्धि होने से कश्मीर में पक्षियों (या नम भूमि की प्रजातियों) की संख्या घट गई है। इसने उन्हें अधिक ऊँचे पर्वतों की ओर उड़ जाने पर विवश कर दिया है। पर्यटकों के मनोरंजन के कारण मुच्छल कुटरी (विस्कर्ड टर्न) और भारत की महत्वपूर्ण फुदकी का डल झील के क्षेत्र में आना बहुत हद तक प्रभावित हुआ है। पर्यटन दबाव के कारण लगभग यही स्थिति दिल्ली के निकटवर्ती उद्यानों जैसे कार्बेट, सरिस्का और रणथम्भोर की भी है।

यहाँ तक कि जंगल की सैरगाहों ने भी काफी हद तक क्षति पहुँचाई है। पर्यटकों के लिए कॉटेजों के निर्माण हेतु वनों को काटना पड़ा; मोलेम-महावीर वन्य जीवन विहार के उदाहरण सामने हैं। यही स्थिति तमिलनाडु में वेल्ला नदी के मुहाने स्थित पिचानारम मैन्ग्रोव वन की है। इस मैन्ग्रोव पर सामान्य जंगली पौधों का अधिकार हो सकता है जिसके कारण इसके नष्ट हो जाने की संभावना है। ये मैन्ग्रोव तटीय कटाव, ज्वारीय कटाव और तूफानों के विरुद्ध प्रतिरोधक का कार्य करते थे। पूर्वी तट के ये मैन्ग्रोव फूलों और मछलियों की विभिन्न प्रजातियों के लिए प्रसिद्ध है। अब इनका 40 % नष्ट हो चुका है। इनके कारण और बढ़ते वाणिज्यिकरण के कारण गाँव जल स्रोत के निकट आते जा रहे हैं। जल के पास बसने के कारण वे कूड़ा करकट जल में फेंक सकते हैं और जो अन्ततः वृक्षों को ही प्रभावित करेंगे। नियोजन और प्रबंधन का अभाव यहाँ निर्णायक सिद्ध हो रहा है।

23.2.2 समुद्री तट और समुद्र

समुद्रों और तटों की पारिस्थितिकी बहुत नाजुक है। इसका मुख्य कारण यह है कि यहाँ दो पारिस्थितिक रूप–धरातल और जलस्थल के बीच परस्पर आदान प्रदान होता है। इन दोनों के मध्य संतुलन बनाए रखना अतिआवश्यक है क्योंकि समुद्र के किनारे रहने वाली संस्कृतियाँ सुकुमार होती हैं। समुद्र तटों पर विकसित होनेवाला पर्यटन मूलतः विलासितापूर्ण होता है। इसे एक उदाहरण से समझा जा सकता है। –होटला रिसॉर्ट के निर्माण से पूर्व आगुआडा गाँव गोवा के समुद्र तट पर बसा एक शान्तिपूर्ण स्थान था जहाँ ताड़ी निकालने वाले, मछुआरे और कृषक एक आत्मनिर्भर जीवन जी रहे थे। होटल

कम्पनियों ने गाँव की बड़ी-बड़ी जमीनें खरीद लीं और अपनी आवश्यकता के अनुसार सड़कों के निर्माण के लिए घने वनों को काट डाला जिसका परिणाम यह निकला कि उस क्षेत्र की प्राकृतिक जल निकास व्यवस्था अस्त व्यस्त हो गई।

आसपास के इलाकों में भी नए होटल बने जिन्होंने न केवल होटल निर्माण के लिए जमीन खरीदी वरन इनपर गोल्फ कोर्स का भी निर्माण किया। इन परिस्थितियों ने इस क्षेत्र को बहुत अधिक परिवर्तित कर दिया। समुद्र के अतिरिक्त प्राकृतिक सुरम्य मनमोहक स्थल का स्थान मानव निर्मित संरचनाओं ने ले लिया।

इस स्थिति को एक और उदाहरण के द्वारा सविस्तार समझा जा सकता है। अण्डमान निकोबार द्वीपों का पर्यटकों के स्वर्ग के रूप में प्रस्तुत और प्रचारित करना पारिस्थितिक रूप से अत्यंत विनाशकारी सिद्ध हुआ। इन द्वीपों में मुक्त बंदरगाह, शॉपिंग कॉम्पलैक्स होटल, कैसीनों, रेस कोर्स, गहरे जल में गोताखोरी, जल क्रिड़ा और स्क्यूबा डाईविंग की सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं। इस विकास के कारण उत्कृष्ट वर्षा वनों और अछूते औशधीय एवं शाकीय पौधों के असीम भंडार को सुरक्षा का संकट उत्पन्न हो गया है। कुछ द्वीपों पर अब भी 85 % से अधिक क्षेत्र पर वन फैले हुए हैं। इन द्वीपों पर फूल वाले पौधे की कुल 2300 प्रजातियों के पाए जाने का अनुमान है जिनमें से 100 जातियाँ अब तक लुप्त हो चुकी हैं। कुछ क्षेत्रों में जानवरों और पक्षियों की संकटापन्न प्रजातियाँ मौजूद हैं। अण्डमान की सर्वोत्कृष्ट विशेषता वहाँ का मूंगा है जो नीले समुद्री जल में चमकीला श्वेत और गुलाबी दिखाई देता है। विकास पर चाहे जितना नियंत्रण हो अन्ततः यह मूंगे को नष्ट कर देगा। अधिकारीगण उत्सुक पर्यटकों को अवैध ढंग से द्वीपों में घुसाने में असमर्थ होंगे जहां वह उन नग्न आदिवासियों को देखना चाहेंगे जो सयोंगवश समाप्ति की कगार पर पहुँच चुके हैं क्योंकि उनके आवास उनसे छीन लिए गए हैं। इनके आवासीय स्थलों पर अतिक्रमण होने से इनकी संख्या अब उंगलियों पर गीनी जा सकती है। (महान अण्डमानवासी-28, ओंर्ग-98, सेंण्टीविलीज़- 50 और जरवा- 250) द्वीप के जीवन की निर्वाह व्यवस्था के लिए आवश्यक असंख्य भौतिक, रासायनिक एवं जैविक प्रकियाएं सब की सब परस्पर निर्भरशील हैं।

किसी भी उप व्यवस्था में चाहे वह वृक्षों से ढकी हुई पहाड़ियां हों या तटीय मैन्ग्रोव किसी भी प्रकार का विघटन अन्य सारी व्यवस्था को जोखिम में डाल देगा। लगभग 200 से अधिक वृक्षों की प्रजातियों के पत्तों को छाँटने और उनमें से केवल 10% को ही हटाने से 55 % पत्तों के विनाश का कारण बन जाएगा। पर्यटन केवल और अधिक बरबादी और अस्थिरीकरण ही ला सकता है। पारिस्थितिकी तो दूर की बात है द्वीपों पर पेय जल का घोर अभाव है। वर्तमान पर्यटन ने लक्षद्वीप के मूंगे को काफी हद तक नष्ट कर दिया है। पर्यटक गतिविधियां जैसे खोदना, कूड़ा करकट डालना, मूंगे के खंडों को उलटना पलटना, स्क्यूबा एवं गोताखोरी इन कोमल पोलियों के लिए मृत्यु समान हैं जो हजारों वर्षों से निर्मित हो रही प्रवाल भित्तियों को क्षतिग्रस्त कर देते हैं।

23.2.3 पर्वत

पर्वत पर्यटकों द्वारा लाई गई बरबादी से अछूते नहीं हैं। इस दृष्टि से लद्दाख विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिसके सारे रास्ते ट्रेक्किंग करने वालों के द्वारा फेंके गए कचरे और गंदगी से भरे पड़े हैं। यह पाया गया है कि पर्वत और घाटियां आलू, फलों, कच्ची पक्की सब्जियों, अण्डों के छिलकों, दवाओं और आहार के पैकेटों, टीन के डिब्बों और ढक्कनों और सूखे भोजनों और इन सबसे बुरा, मानवीय मलों से भरी पड़ी हैं। नेपाल में अकेले माउंट एवरेस्ट से 200 किलोग्राम कचरा हटाया गया है। शिखर की ओर आयोजित प्रत्येक अभियान के पश्चात बहुत बड़े पैमाने पर वनों की कटाई होती है। पर्यटकों में से केवल 7 % ही लकड़ी के स्थान पर इंधनों का उपयोग करते हैं। इसीलिए अधिक ऊँचाइयों पर वनस्पति विरल है।

डलझील पानी की गन्दगी और जालों के कारण मृत्यु के कगार पर पहुँचने वाली एक और मिसाल है। सबसे अधिक प्रदूषण वे 8000 हाउस बोट फैलाते हैं जिनमें उचित मल मूत्र निकास की सुविधा नहीं है इसलिए सारा अपशिष्ट जल में ही बहा दिया जाता है जिसमें बैक्टीरिया और विभिन्न प्रकार के वायरस पलते हैं। श्रीनगर के शहरी वनों को जिन्हें राष्ट्रीय उद्यान कहा जाता है पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए अब गोल्फ कोर्स के रूप में परिवर्तित करने का प्रयास किया जा रहा है। ये उद्यान असंख्य वन्य प्राणियों और पक्षियों का आश्रय क्षेत्र है और डलझील का अप्रवाह क्षेत्र भी है। पारिस्थितिकीविज्ञों को भय है कि यदि उद्यान के दलदल को भरा गया तो यह झील के पारिस्थितिक आधार को अस्त व्यस्त कर देगा।

कुमायूं एवं गढ़वाल हिमालय क्षेत्र में भीं पर्यटन ने प्रत्यक्ष रूप से तबाही फैलाई है। अत्यंत उत्तम प्रकार के बहुत बड़े क्षेत्र में फैले हुए वन और चरागाहों को पर्यटन विकास के लिए चुना गया। आगंतुकों की संख्या का मूल्यांकन किए बिना सारे महत्वपूर्ण नगरों में इमारतें खड़ी कर दी गईं हैं। ये इमारतें स्वयं कुरूप और आँखों में चुभने वाली हैं, स्थानीय वास्तुशिल्पीय पर्यावरण से यहाँ तक कि आस पास की प्रकृति से भी मेल नहीं खाती हैं। उदाहरणार्थ एक छोटी बस्ती के पर्यटकों के लिए बने बंगले का 2% ही उपयोग हो पाता है फिर भी उत्तर प्रदेश सरकार एक और बंगला बनाने की तैयारी कर चुकी है जो पड़ोस के एक जंगल के टुकड़े को साफ करके बनाया जाएगा।

"पर्यटन ही पर्यटन को बरबाद करता'' की कहावत के बिलकुल अनुकूल उदाहरण हम पहाड़ी सैरगाहों की दुर्दशा के रूप में देख सकते हैं। भवन निर्माण से न केवल जंगलों को काटा जाता है बल्कि कस्बों में नगरीय विकास की एक संस्कृति को लाने का भी प्रयास किया जाता है। इन छोटी छोटी सामाजिक आर्थिक समस्याओं के अतिरिक्त अनियंत्रित पर्यटन पर्यावरण को विनाश की अंतिम सीमारेखा की ओर ले जा रहा है।

बोध प्रश्न 1

1) बढ़ते हुए पर्यटन के परिणामस्वरूप वन्य जीवन पर दबाव की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) पर्यटन और समुद्रों तथा समुद्री तटों की पारिस्थितिकी के मध्य क्या संबंध हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

3) पर्यटन किस प्रकार पर्वतीय पारिस्थितिकी को बिगाड़ता है ?

.....

.....

.....

.....

.....

23.3 न्यूनतम पर्यावरणीय सीमारेखाएँ

पर्यटन एक बड़ा व्यवसाय है–शायद सबसे बड़ा नागरिक व्यवसाय है जिसमें अनुमानित 420 लाख पर्यटक 40 मिलियन अमेरीकी डॉलर प्रति वर्ष व्यय करते हैं। यह उद्योग दूसरे उद्योगों से न बेहतर है न बुरा, और यदि आप उद्योग का संबंध विकास से जोड़ते हैं तो आप पर्यटन का समर्थन करेंगे। अत: हमारे लिए यह आवश्यक है कि पर्यटन के संदर्भ में न्यूनतम पर्यावरणीय सीमारेखाओं को समझें। क्योंकि यही पर्यटन के उन रास्तों को निर्धारित करेंगे जिन पर पर्यटन को भविष्य में चलना है। हम यहाँ ऐसी सीमा रेखाओं की तीन घटकों पर विचार करें, जैसे बढ़ता हुआ प्रदूषण, प्राकृतिक संसाधनों का बढ़ता हुआ शोषण और बढ़ती हुई जनसंख्या। यदि उचित रूप से समय रहते इनका प्रबंध न किया गया तो ये हमारी प्रकृति या पारिस्थितिक तंत्र को भंयकर रूप से नष्ट कर सकता है। निम्नलिखित तीन पक्ष परस्पर सम्बद्ध हैं फिर भी हम उनका अलग-अलग अध्ययन करने का प्रयास करेंगे।

23.3.1 प्रदूषण

दावा किया जाता है कि पर्यटन उद्योग एक ऐसा बेजोड़ सौम्य उद्योग है जिसमें धुएं की चिमनी की आवश्यकता नहीं होती और खर्च किए गए प्रत्येक डॉलर का गुणक प्रभाव होता है। यह उन लोगों की दलील है जिनका उसमें स्वार्थ है। यह सत्य है कि पर्यटन धुआँ नहीं उगलता किंतु प्रदूषण बहुत से अन्य तरीकों से आता है और पर्यटन ने कुछ अपने अलग प्रकार के प्रदूषण पैदा किए हैं।

दुर्भाग्यवश अबतक का अनुभव कहता है कि जो बिगड़े हुए नहीं हैं उन्हें आसानी से बिगाड़ा जा सकता है। पर्यटन को अब मानवकृत पारिस्थितिकी की हस्तक्षेपों जैसे खनन एवं वन-अवरोपण से अलग नहीं किया जा सकता। विकासशील देशों में एक दिक्कत और है औद्योगिक संसार के धनी पर्यटक यहाँ आते हैं और यहाँ के गरीब लोग उनकी सेवा करते हैं और अमीर पर्यटकों की सेवा करते हुए वे प्राकृतिक संसाधनों के शोषण को सुनिश्चित नहीं कर सकते हैं।

पर्यावरण की वहन क्षमता के संदर्भ में पर्यटन विकास पर्यावरण को प्रभावित करता है। विभिन्न प्रकार के विकास के परिणामस्वरूप पर्यावरण पर अलग-अलग ढंग से प्रभाव पड़ता है और उनमें से कई केवल पर्यटन से ही जुड़े हैं। यदि इन कुप्रभावों पर रोक नहीं लगाया गया तो वह पारिस्थितिक असंतुलन उत्पन्न करने की न्यूनतम सीमारेखा पार कर जाएगा।

पर्यटन उद्योग में प्रदूषण दूसरे प्रकार के होते हैं। यदि होटलों, रेस्तरां और अन्य पर्यटन सुविधाओं के लिए मल निपटान की व्यवस्था नहीं की गई है तो भूमिगत जल से प्रदूषित हो जाएगा, या यदि मल का सही ढंग से उपचार नहीं किया गया तो यह जमीन के ऊपर जल क्षेत्र को दूषित कर देगा। वायु प्रदूषण बढ़ते हुए पर्यटन का नतीजा है। पर्यटकों के लिए और पर्यटकों के द्वारा मोटर गाड़ियों जैसे कारों, बसों और मोटर साइकिलों के क्षेत्र विशेष में अधिक प्रयोग किए जाने के कारण और खास तौर पर उन प्रमुख पर्यटन केंद्रों पर जहाँ केवल सड़क मार्गों से ही पहुँचा जा सकता है इस प्रकार का प्रदूषण उत्पन्न हो सकता है। यदि पर्यटन विकास उचित रूप से सुनियोजित, विकसित एवं स्थल के अनुरूप न किया गया हो या अभी इसका निर्माण चल रहा हो तो वायु में उपस्थित धूल और गंदगी भी वनस्पति रहित क्षेत्रों में प्रदूषण फैला सकते हैं।

वायुवानों, मोटर नौकाओं और कभी कभी विशेष प्रकार के पर्यटक आकर्षण जैसे मनोरंजन उद्यानों का शोर निकटवर्ती निवासियों और अन्य पर्यटकों के लिए कष्टदायक एवं क्षुब्ध कर देने के स्तर तक पहुँच जाता है।

यह प्रदूषण मनुष्यों के लिए अपेक्षाकृत कम हानिकर है क्योंकि हम बचाव के रास्ते अपना सकते हैं किन्तु इनसे शेष सम्पूर्ण जीवमण्डल को क्षति पहुँचाती है।

23.3.2 जनसमुदाय

जनसमुदाय का हमारी पारिस्थितिक व्यवस्था से बहुत महत्वपूर्ण संबंध है क्योंकि वही हमारी मौलिक अस्तित्व के लिए विभिन्न प्रकार के साधन जुटाता है। बुनियादी तौर पर आहार जमीन/धरातल से पैदा होता है या प्राप्त किया जाता है जिसे अधिक दोहन से बचाने के लिए सुरक्षा उपायों की आवश्यकता होती है। आश्रय के लिए धरातल/स्थान की आवश्यकता होती है किन्तु बढ़ती हुई आबादी ने न केवल स्थान बल्कि हर समान का अभाव पैदा कर दिया जाता है। वास्तव में हम बहुत जटिल स्थिति में हैं क्योंकि दुनिया को कृषीय उत्पादन के लिए अधिक जमीन की आवश्यकता है और इसके साथ ही बढ़ती हुई जनसंख्या के रहने के लिए भी इसकी आवश्यकता है।

जैसा कि हमने आगे आनेवाले उपभाग (23.3.3) में विचार किया है कि संसाधनों के लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया सन् 1700 में शुरू हुई जो आज तक चल रही है। विश्व महायुद्ध II में यह विशेष तौर पर क्रियाशील हुआ।

प्रौद्योगिकी ने रसायनशास्त्र के माध्यम से कृत्रिम रेशों, प्लास्टिक, अकार्बनिक कीटनाशक, सीसा युक्त इंधन और ऐसे कई प्रकार के उत्पादों की सहायता से, जो अन्ततः पर्यावरण को विशाक्त करेंगे एवं जैविक रूप से क्रियाशील पदार्थों के घुसपैठ को ही बढ़ावा देंगे, जीवन को सुखद बनाया। औद्योगिक प्रौद्योगिकी के इस विस्फोट में युद्धोपरान्त होने वाली जनसंख्या विस्फोट और जुड़ गया। परिणामस्वरूप वायु, पुथ्वी और जल के प्रदूषण में रसायनों और रासायनिक अवशिष्ट के कारण घातक रूप से वृद्धि हुई। शीघ्र ही प्रदूषकों के विशैले प्रभाव को समाप्त करने और उनके प्रभाव के अनुसार सामंजस्य स्थापित करने की स्वाभाविक प्रक्रिया समाप्त होने लगी। मानवीय क्रिया कलापों और उनके द्वारा निर्मित उत्पाद पारिस्थितिक तंत्र की सीमाओं को चुनौती देने लगे।

दिनोंदिन मनुष्य के बढ़ते कार्यकलाप जीवमण्डल द्वारा निर्धारित सीमारेखा को पुनर्निधारित कर रहे हैं। ग्रीन हाउस गैसों के बहुत बड़े पैमाने के शहरी औद्योगिक विमुक्ति के कारण मौलिक वायुमण्डलीय प्रक्रियाएं संशोधित होती जा रही हैं क्योंकि ये ग्रीन हाउस गैसें वायुमण्डल की निचली परत में तापन उत्पन्न करती हैं, समतापमण्डलीय ओजोन परत को प्रभावित करने वाली क्लोरा फ्ल्यूरोकार्बन गंधक तथा नाइट्रोजन ऑक्साइड भी उत्पन्न करती है जो अम्लीय निक्षेपण का कारण बनती हैं। बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण पर्यावरण का अधिक से अधिक दोहन करने के लिए ये सब प्रयास किए जा रहे हैं। यदि उचित ढंग से प्रबंधन किया गया तो यह हमारे पर्यावरण के सम्पूर्ण विनाश का कारण भी बन सकता है।

23.3.3 प्राकृतिक संसाधनों का दोहन

प्रकृति के जीवित रहने के अपने अलग तरीके हैं और मनुष्य का अधिक हस्तक्षेप उस प्रक्रिया को अस्त व्यस्त कर देता है जो पारिस्थितिकी को बनाए रखता है। पर्यावरणीय दृष्टि से भंगुर और अतिसंवेदनशील क्षेत्रों में पर्यटन का विकास होने से स्थानीय रूप से प्राप्त संसाधनों का दोहन होता है ताकि पर्यटकों को मौलिक सुख साधन उपलब्ध कराया जा सके। हालाँकि प्राकृतिक संसाधनों के दोहन का प्रश्न केवल पर्यटन के संदर्भ में पूर्ण रूप से नहीं समझा जा सकता और हमें इस समस्या को बड़े परिदृश्य में देखना पड़ेगा।

17 वीं शताब्दी तक प्राकृतिक संसार के दोहन का अधिकार और प्रतिफल अधिकतर विशिष्ट अभिजात वर्ग के हाथ में था। 17 वीं शताब्दी के उतरार्ध में हुई प्रजातांत्रिक क्रांतियों ने, जिसमें अमेरीकी क्रांति 1775-1783 और फ्रांसीसी क्रांति 1789-1799 सम्मिलित है, अधिकांश पाश्चात्य समाजों के ढांचे में फेरबदल प्रारंभ कर दिया। इसके साथ ही जनसाधारण की उत्पादक संसाधनों तक पहुँच तक वृद्धि हो गई, और आर्थिक तथा सामाजिक प्रतिष्ठा को सुधारने के लिए उनकी योग्यता भी बढ़ी। इस प्रकार प्राकृतिक संसाधनों के दोहन का वैद्य अधिकार समाज के आम जन तक पहुँचा।

लगभग उसी समय–17 वीं शताब्दी के मध्य में औद्योगिक एवं वैज्ञानिक क्रांतियाँ प्रारंभ हुईं। उद्योग के क्षेत्र में बढ़ी हुई क्षमता के साथ नए सिरे से संसाधनों को संसाधित करने के लिए मशीनों और शक्ति के साधनों को काम में लाया जाने लगा। भाप के इंजन के साथ ही रेलमार्गों का शुभारंभ हुआ, पानी के जहाज चलने शुरू हुए और इनके कारण दोहन के नए क्षेत्र खुले। विज्ञान की नई खोजों के कारण प्रकृति की मौलिक अवधारण में क्रांतिकारी परिवर्तन आए। अभी तक भगवान के द्वारा बनाया गया और उसी के द्वारा चलाया जाने वाला विश्व अब इन क्रांतियों के पश्चात भगवान के स्थान पर भौतिकी और रसायनशास्त्र के आधारभूत सिद्धांतों के अनुसार कार्य करने लगा। औद्योगिक और वैज्ञानिक क्रांतियों ने सामान्य व्यक्तियों को संसाधनों के दोहन करने और आर्थिक लाभ कमाने की बेहतर योग्यता प्रदान की।

18 वीं शताब्दी उपनिवेशवाद और विश्व व्यापार के द्वारा पाश्चात्य संस्कृति के विश्वव्यापी प्रसार की पराकाष्ठा थी। पर्यावरणीय दोहन की पश्चिमी प्रणाली इस प्रकार दूर दूर तक फैल गई और उन क्षेत्रों में भी मनुष्यों और प्रकृति के आपसी संबंध का मौलिक दर्शन बिलकुल भिन्न था वहाँ भी यह प्रणाली प्रचलित हो गई।

विडम्बना यह है कि पर्यावरण गरीब देश के लिए अधिक चिंता का विषय है क्योंकि वहाँ के अधिकतर लोगों का रोजगार धरती पर ही आश्रित होता है। उनमें से अधिकांश को जलस्रोतों, तालाबों, कुआँ या फिर सार्वजनिक नलकूपों से जो सैकड़ों परिवारों की प्यास बुझा रहे हैं पानी लेने के लिए दूर दूर तक पैदल यात्रा करनी पड़ती है। अत: यह अक्सर कहा जाता है कि किसी गरीब देश में पर्यावरण का दोहन विलासिता है जिसे वह बर्दाश्त करने की स्थिति में नहीं होता है।

23.4 कुछ हल

अपने पर्यावरण पर पड़ने वाले दबावों को नियंत्रण में रखना बहुत आवश्यक है। जैसा कि ऊपर विचार किया जा चुका है कि विभिन्न दबावों और न्यूनतम सीमारेखाएँ पर्यावरण के प्रति हमारे व्यवहार के औचित्य पर ही प्रश्न चिह्न लगाने लगे हैं। यह तर्क भी दिया जाता है कि पर्यटन हाँलाकि धुँआ रहित उद्योग है फिर भी वह पर्यावरण के प्राकृतिक संतुलन के विनाश में भागीदार है।

अत: यह विचार व्यक्त किया जाता है कि इस समस्या को बहुत विस्तृत परिप्रेक्ष्य में देखना चाहिए। इसे केवल पर्यावरण के लिए उपयुक्त पर्यटन प्रबंधन तक ही सीमित नहीं करना चाहिए। विद्यालयों के पाठ्यक्रम में अन्य विषयों के मूलभूत भाग के रूप में पर्यावरणीय शिक्षा को सम्मिलित किया जाना चाहिए ताकि कोई भी कार्य करते वक्त संरक्षण का ख्याल रहे। अत: एक अलग विषय के रूप में उसे सम्मिलित करना नितांत आवश्यक है ताकि पारिस्थितिकी को अधिक औपचारिक ढंग से पढ़ाया जा सके और उसकी धारणाएं सरलता के साथ पूर्णरूप से समझी जा सकें। अत: पर्यावरणीय अध्ययन एक अनिवार्य विषय के रूप में होना चाहिए। अध्ययन सामग्री जैसे पाठ्य पुस्तकें, श्रव्य दृश्य साधन, पोस्टर, पेम्पलेट आदि ऊपर वर्णित समस्याओं को दृष्टि में रखकर तैयार किया जाना चाहिए। यह सहायता सामग्री पारिस्थितिकी की धारणाओं को समझाने में सक्षम होनी चाहिए। संरक्षण और पर्यावरणीय शिक्षा बच्चों की स्कूली गतिविधियों का महत्वपूर्ण अंग होना चाहिए। वन्य प्राणी को प्रोत्साहन देना चाहिए और युवाओं के कार्यकलापों में पर्यावरणीय शिक्षा को शामिल करना चाहिए।

ऐसे अवसरों का फायदा उठाना चाहिए जब पर्यटक/सामान्य जनता राष्ट्रीय उद्यानों, चिड़ियाघरों आदि में पौधों और प्राणियों के सम्पर्क में आते हैं तो उन्हें संरक्षण के उद्देश्यों और मानवों के अस्तित्व और कुशलता के लिए उनके योगदान से अवगत कराना चाहिए। ऐसी संरक्षण शिक्षा अनिवार्य शिक्षा के उद्देश्यों को पूरा करने के साथ साथ आरक्षित क्षेत्रों पर से दबाव हटाने में सहयोग भी देता है और विशेष रूप से भंगुर अथवा अनोखी पारिस्थितिक व्यवस्था की सुरक्षा में भी सहायता करता है। लोकप्रिय प्राणी जैसे हिरण को उन पारिस्थितिक व्यवस्था को ज्यादा अच्छी तरह समझने के लिए प्रयोग किया जा सकता है। संरक्षण को मानवीय अभिरुचियों और आकांक्षाओं के केंद्र बिन्दु के रूप में देखने के लिए लोगों का ध्यान इस ओर आकृष्ट करना अनिवार्य है।

बोध प्रश्न 2

1) प्रदूषण क्या है और यह हमारे पर्यावरण के लिए हानिकर क्यों है ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) जनसंख्या विस्फोट पर्यावरण के लिए क्यों समस्याएं उत्पन्न करता है ?

.....

.....

.....

.....

.....

3) आम लोगों में पर्यावरणीय जागरुकता बढ़ाने के लिए कुछ उपाय सुझाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

23.5 सारांश

पारंपरिक दृष्टि से पर्यटन को धुँआ रहित क्रिया के तौर पर वर्णित किया जाता रहा है किंतु जैसा कि हम इस इकाई में विचार कर चुके हैं ये भी पर्यावरणीय असंतुलन उत्पन्न करते हैं। हमने पर्यटन के परिणामस्वरूप पर्यावरण पर दबाव को विश्लेषित किया है और दूसरी ओर उन न्यूनतम सीमारेखाओं को समझा है जो भविष्य के खतरे से हमें आगाह कर रहे हैं। जनसंख्या प्रदूषण, प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के प्रश्न घनिष्ठ रूप से परस्पर संबंधित हैं। अतः सुझाव यह है कि आप केवल पर्यटन को ही

समझने का प्रयास न कीजिए बल्कि सामाजिक गतिविधियों में भी पर्यावरण के संरक्षण का ख्याल रखिए।

23.6 शब्दावली

अजैविक कारक : वह जो बेजान हों, इनमें पर्यावरण की वह भौतिक और रासायनिक परिस्थितियाँ सम्मिलित हैं जो अनिवार्यत: जैव प्रकारों से सम्बद्ध नहीं होती हैं।

जैविक कारक : जो सजीव हैं, इनमें वे पौधे प्राणी, और जीवाणु सम्मिलित हैं जो आपस में प्रतिस्पर्द्धा करते हैं या हस्तक्षेप करते हैं।

23.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए उपभाग 23.2.1

2) देखिए उपभाग 23.2.2

3) देखिए उपभाग 23.2.3

बोध प्रश्न 2

1) देखिए उपभाग 23.3.1

2) देखिए उपभाग 23.3.2

3) देखिए भाग 23.4